भगत रविदास – सबद ११
हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥
रागु आसा, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ४८७

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ॥१॥ रहाउ ॥
हरि के नाम कबीर उजागर ॥
जनम जनम के काटे कागर ॥१॥
निमत नामदेउ दूधु पीआइआ ॥
तउ जग जनम संकट नही आइआ ॥२॥
जन रविदास राम रंगि राता ॥
इउ गुर परसादि नरक नही जाता ॥३॥५॥

सार: जागरूकता एक शक्तिशाली साधन है जो हमें एक ही बिंदु पर स्थिर करना सिखाती है जब तक कि ध्यान भटकाने वाली चीज़ें खत्म न हो जाएं जिससे हमारा ध्यान स्थिर हो जाता है। इस प्रक्रिया में क्रिया सिर्फ़ कोशिश से बदलकर, गहरी डूबने की स्थिति में बदल जाती है। जागरूकता के अभ्यास से, अलगाव का एहसास समाप्त होने लगता है जिससे हम नकारात्मकता, अज्ञानता और अहंकार से बनी रुकावटों को ख़त्म कर पाते हैं। यह अभ्यास हममें से हर एक के अंदर मौजूद दिव्य उपस्थिति को पहचानता है जिससे एकता की गहन भावना पैदा होती है। आपस में जुड़ाव की संबद्धता को अपनाने के लिए सिर्फ़ शब्दों से ज़्यादा की ज़रूरत होती है, इसके लिए सच्चे स्वरूप से अपनाने और एकता की ऊपर उठाने वाली भावना का निरंतर स्मरण की ज़रूरत होती है जिससे हमारे जीवन में बड़ा बदलाव आ सकता है।

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥

सर्वव्यापी स्रोत सभी अस्तित्व में जीवन के सार के रूप में प्रकट, प्रवाहित और स्पंदित होता है। 'हर' शब्द का बार-बार उपयोग, जो सार्वभौमिक जीवन शक्ति का प्रतीक है, हमारा ध्यान इस अद्वितीय, सर्व-समावेशी उपस्थिति की एकता की ओर खींचता है।

हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ॥१॥ रहाउ ॥

सर्वव्यापी चेतना पर मनन करते हुए, समर्पित साधक सहज कुशलता से ही संसार-सागर से पार होकर आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करता है। यह बताता है कि सजग सचेतना हमारी अंतरात्मा को सांसारिक मोह के सागर से पार करा सकती है। (१)(विराम)

हरि के नाम कबीर उजागर ॥

सर्वव्यापी चेतना के चिंतन से, कबीर को ज्ञान का बोध प्राप्त हुआ। यह आत्म-चिंतन की परिवर्तनकारी शक्ति को दर्शाता है।

जनम जनम के काटे कागर ॥१॥

हमारी अंतरात्मा पर अंकित कई संस्कार जो ज़िम्मेदारी लगते थे, वह समाप्त हो जाते हैं। यह परिवर्तन दर्शाता है कि जब आंतरिक सामंजस्य बढ़ता है तब दृष्टिकोण की बाधाएँ दूर हो जाती हैं। (१)

निमत नामदेउ दूधु पीआइआ ॥

भक्ति में, नामदेव ने मूर्ति को पीने के लिए दूध अर्पित किया। यह प्रतीकात्मक कार्य मासूमियत और निडरता को दर्शाता है जो साधक और ईश्वर के बीच की उंच-नीच के भेद की बाधाओं को तोड़ता है जिससे एक अधिक समान मिलन संभव हो पाता है।

तउ जग जनम संकट नही आइआ ॥२॥
परिणामस्वरूप, दुनिया और अस्तित्व कष्टदायक नहीं लगते। यह जीवन को बिना किसी विरोध के स्वीकार भाव से जीने पर मिलने वाली सहजता की ओर इशारा करता है न कि इसे अस्तित्व के संकट के रूप में अनुभव किया जाए। (२)

जन रविदास राम रंगि राता ॥
भक्त रविदास कहते हैं विनम्रता से, कि वह सर्वव्यापी एकता के सार में डूबे हुए हैं।

इउ गुर परसादि नरक नही जाता ॥३॥५॥
इस प्रकार, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि की कृपा से, विवेक नरक से ऊपर उठ जाता है, 'नरक' जो नकारात्मकता का प्रतिनिधित्व करता है। यह 'नरक' को एक भौतिक स्थान के रूप में नहीं बल्कि अज्ञानता की एक मानसिक स्थिति के रूप में परिभाषित करता है जो आंतरिक अशांति और कश्मकश की ओर ले जाती है। (३)(५)

तत्त्व: भक्त रविदास, कबीर और नामदेव जैसी महान आत्माओं का ज़िक्र करके हमें प्रेरणा देते हैं। यह बहुत विकसित चेतना को दिखाता है जो गहन भीतरी यात्रा में मौजूद होती है। इस ज्ञान की अवस्था में, जागरूकता, तालमेल और आत्मसात के माध्यम से विकसित होती है और रीति-रिवाजों, दिखावटी परिश्रम और भेदभाव जैसे पुराने सामाजिक नियमों से ऊपर उठ जाती है। यह बदलाव स्पष्टता लाता है, भय और भेदभाव की जगह लेता है और इसका नतीजा एक शांत, सामंजस्यपूर्ण स्थिरता होती है जो एकता को अपना लेती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com